आजादी का अमृत महोत्सव

बिटिया तुम संघर्ष करो

उत्तरायण फाउण्डेशन की पहल

NATIONAL HEART INSTITUTE
TRANSPLANTING HEALTH AND HAPPINESS

सहयोग-
नेशनल हार्ट इंस्टीयूट, नई दिल्ली

UTTARAYANA HEALTH

बीते दो दशकों में उत्तराखण्ड के पर्वतीय समाज के बीच जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करते हुए अनेकों अनुभव अर्जित किए। पर्वतीय भौगोलिक चुनौतियों के बीच रह रहे यहां के जीवट समाज के लिए बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करना अभी भी कठिन है। पहाड़ों में अच्छे चिकित्सकों और अच्छी गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा की पहुंच अभी दूर है।

हृदय और नेत्र रोगों के साथ अन्य बीमारियों को स्क्रीनिंग के बाद उपचार व शल्य आदि के सैकड़ों रोगियों को नई दिल्ली स्थित अपने संस्थान में उच्च कोटि से उपचारित करने में सदैव सफलता अर्जित की है। यहां के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर लगाए गए कैंपों में हमारी टीम का समाज से गहरा लगाव बना। इसी का परिणाम था कि, हमने उत्तरायण फाउण्डेशन गठित कर इस क्षेत्र में समाज के प्रति अपने दायित्वों को संकल्पित रूप से पूरा करने का निर्णय लिया। कोविड संकट काल ने हमें समाज को और समग्रता में देखना सिखाया।

दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में अभाव ग्रस्त परिवारों की स्थिति ने हमें आगे बढ़कर मदद करने को प्रेरित किया। 300 से अधिक परिवारों तक हम अपनी छोटी बड़ी मदद भी पहुंचाने में सफल हुए। इस काल में एक और बड़ी चुनौती हमारे समक्ष थी वह थी, कोविड काल प्रभावित परिवारों के बच्चों को संरक्षण देना। इसके मंथन के बीच एनएचआई टीम के सहयोग से हमने 'जीवन निधि' अभियान चलाने का निर्णय लिया। अपने क्षमताओं के अनुरूप हमने प्रारंभ में 10 बच्चियों का चयन करने का निर्णय लिया। यह उत्तराखण्ड सरकार की वात्सल्य योजना शुरू होने से पहले का निर्णय था, जो वात्सल्य योजना शुरू होने से प्रभावित भी हुआ। प्रदेश सरकार द्वारा यह योजना शुरू करने से हमें भी हर्ष हुआ।

हमारे प्रयासों में वात्सल्य योजना से वंचित बच्चों का चयन करना एक चुनौतिपूर्ण कार्य था। अनेक प्रयास इसमें काम आए। अल्मोड़ा अमन संस्था के प्रमुख शु तिवारी, नीलिमा जी बाल कल्याण समिति सदस्यों , बाल विकास विभाग

के राजीव नयन जी व मुख्य रूप से अल्मोड़ा जिलाधिकारी वंदना सिंह जी जैसे संवेदनशील लोगों ने हमारे सदप्रयासों को प्रेरित किया और अल्मोड़ा बालिका निकेतन से प्रथम चरण में 7 जरूरतमंद बालिकाओं के संरक्षण का सौभाग्य हमें मिला।

सेवन सिस्टर्स का यह बैच विभिन्न कानूनी प्रक्रियाओं के बाद जब दिल्ली पहुंचा तो यह हमारे लिए सर्वाधिक उत्साह का पल था। इन बच्चियों के अंधकारमय अतीत और उसकी पीड़ाओं ने हम सभी के मन को द्रवित किया। बीते एक साल में अनेक छोटे बड़े प्रयासों के बाद हम इन सेवन सिस्टर्स को व्यवस्थित करने में सफल हुए हैं। हमारा प्रयास है, कि यह सभी बालिकाएं आत्मविश्वास, अच्छी शिक्षा, कौशल और मानवीय गुणों से लैस होकर सशक्त भारत की सशक्त मातृ शक्ति बनकर आगे बढ़ें। जिससे बेटी पढ़ाओ–बेटी बचाओं की राष्ट्र व्यापी मुहीम में हम भी सार्थक सहभागी बनें। अपनी पूरी टीम के साथ मेरा पूरा विश्वास है कि राज्य के विभिन्न सामाजिक कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधियों आदि का हमें पूरा सहयोग मिलेगा और इस सामाजिक कार्य में वे हमारे सहयोगी बनेंगे और हमारे 11 बच्चों के नए बैच के संरक्षण व संवर्धन में सहभागी होंगे।

डॉ० ओ० पी० यादव
अध्यक्ष
उत्तरायण फाउण्डेशन
एवं सीईओ, एनएचआई, नई दिल्ली

आगामी सुनहरे दिनों के लिए हमें बालिकाओं को सशक्त बनाना होगा। इसी ध्येय के साथ हम साल के प्रथम माह में राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाते हैं। निस्वार्थ प्रेम और पवित्र आत्मा के साथ बालिका किसी भी परिवार में रोशनी लाती है। किसी भी परिवार को सभ्य बनाने और उस घर में प्रेम का संचार करने में बालिका की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। लेकिन विडम्बना है कि, आधुनिक सभ्य कहा जाने वाले समाज में भी बालिकाओं के प्रति नजरिए में परिवर्तन नहीं आ रहा है। महानगरों में महिला हिंसा और शोषण की तस्वीर दूसरी है, वहीं दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में वे दूसरे प्रकार के शोषण का शिकार है। विश्व स्तर पर एक आदर्श देश बनने के लिए हमें आगामी 2030 तक अनेक बड़ी चुनौतियों को पूरा करना है जिससे देश में मातृ मृत्यु दर को कम करना, सभी को सार्वभौम चिकित्सा सेवाएं देना, नवजात शिशु मृत्यु दर को कम करना संक्रामक बीमारियों पर नियंत्रण, देश में शिक्षा को आदर्श स्थितियों तक पहुंचाना जैसे लक्ष्य शामिल है। दूसरी ओर विश्व भर में दर्ज आंकडों के अनुसार आज भी 830 महिलाएं प्रतिदिन प्रसव व उससे जनित कारणों से अपने प्राणों को गंवा रही है। भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में सभी को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा व स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाना एक बड़ा कठिन लक्ष्य है। आज की बालिका आगामी भारत की आदर्श नागरिक और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रमुख वाहक बनेगी। बालिकाओं को न्यूतनम संसाधनों के साथ सुरक्षित, संरक्षित और स्वतंत्र परिवेश देकर हम विश्व स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। यह वास्तविक पूंजी निवेश होगा। हमें किसी दया भाव अथवा धार्मिक भावेश से नहीं वरन देश, समाज और अपने भविष्य के लिए सशक्त नारी शक्ति की जरूरत है, जो आज की बालिकाओं को बनना है। उत्तरायण फाउण्डेशन की पहल और हमारी एनएचआई की टीम द्वारा किया जा रहा यह छोटा सा प्रयास हमें अत्यधिक उत्साह दे रहा है और जीवन की सार्थकता का भी बोध करा रहा है। आज बालिकाओं का सशक्तीकरण ही भविष्य का सर्वोत्तम निवेश है।

डॉ० विनोद शर्मा
उपाध्यक्ष
उत्तरायण फाउण्डेशन
एवं वाईस सीईओ, एनएचआई, नई दिल्ली

महिलाएं जन्म से ही हमारे समाज में विभिन्न रूपों में भेदभाव का शिकार रही है। आधुनिक कही जाने वाली दुनिया भी महिला अपराधों, उत्पीड़न और उपेक्षा से वंचित नहीं है। समाज में हाशिए में खड़ी आधी आबादी हमारे कथित विकसित और सभ्य समाज पर बड़ा कलंक है। यह महिलाओं की जीवनशक्ति ही है जो उन्हें विषम परिस्थितियों में भी जीवित रखती है। बीते कई सालों से रोगियों को देखने के बहाने उत्तराखण्ड और अन्य पर्वतीय राज्यों में महिलाओं और बच्चियों को नजदीक से देखने समझने का मौका मिला और पाया कि उनकी भौतिक पीड़ा के पीछे सामाजिक कारण अधिक है। पर्याप्त पोषण न मिलना, ढंग से लालन पालन न होना , शिक्षा का उचित माध्यम न होना, शिक्षित होने पर भी सामाजिक कारणों से अपने कौशल को न बढ़ाना और अत्यधिक कार्यबोझ में दबा रहना जैसे अनेक कारणों से महिलाएं एक बुझे हुए दिए की भाँति अपना जीवन जी रही है।

यह बात सच है कि समाज में बालिकाओं का एक तबका रोशन होकर जगमगा रहा है। कला, साहित्य, विज्ञान, चिकित्सा सहित अनेक क्षेत्रों में बालिकाओं के जगमगाने की रोशन तस्वीरों से बहुसंख्यक बालिकाओं के बारे में धारणा बनाना गलत होगा। तब जब हमारे नारी व बालिका निकेतनों में हर साल वंचित, शोषित, लावारिस, और पीड़ित बालिकाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। विभिन्न प्रयासों से आज समाज का एक तबका बालिकाओं के जीवन के महत्व को समझ रहा है और उन्हें बनने और आगे बढ़ने में

सहयोग कर रहा है। आज जरूरत है कि चुनौतियों के इस दौर में कन्या के प्रति व्यापक समाज के दृष्टिकोण में स्थायी परिवर्तन आना चाहिए। महिलाएं हमारे समाज ही नहीं संसार की महत्वपूर्ण वाहक हैं, इस चेतना से समाज को लैस होना ही होगा, शायद इसके बाद हमें एक सुसंस्कृत देश में बेटी बचाने का आह्वान ही न करना पड़े। क्योंकि बाघ , पाण्डा, चील आदि की भाँति किसी समाज में मानव के एक दूसरे लिंग बालिका को बचाने के लिए करोड़ों लोगों को अपील करना एक सभ्य समाज की निशानी नहीं हो सकती । हमारी एनएचआई और उत्तरायण फाउण्डेशन टीम के इन प्रयासों में सहभागी बनने का मुझे भी अवसर मिला है, जिसमें इन बच्चों के लिए जितना किया जाए कम हैं।

डॉ० उषा यादव
वरिष्ठ सदस्य
उत्तरायण फाउण्डेशन
एवं पूर्व निदेशक,एंव प्रोफेसर(नेत्र विज्ञान)
मौलाना आजाद मेडिकल कालेज , दिल्ली

2 शब्द-

हर घर की मुख्य संरक्षिका और विविध क्षेत्रों में काम करने वाली महिला के योगदान को अधिकांश दरकिनार कर दिया जाता है। दुनियां में आज वही देश और समाज तरक्की की राह में आग्रसर है जहां महिलाओं को लैंगिक आधार पर भेदभाव व उपेक्षा का शिकार नहीं होना पड़ता। घर की दहजीज हो या समाज के विभिन्न क्षेत्र महिलाओं के भीशण शोषण की घटनाएं आए दिन प्रकाश में आती है और समाज की वास्तविकता से हमें आगाह भी करती है। अपनी शर्म, अज्ञानता और जानकारी के अभाव में वे इस अन्याय और शोषण को बड़ी सीमा तक सहती भी है। बालिकाओं का पर्याप्त शिक्षा और अच्छे पोषण के साथ उचित आवासीय सुविधा देकर हम उन्हें बड़ी सीमा तक आत्मनिर्भरता की ओर ले जा सकते हैं। बालिकाओं को व्यवसायिक शिक्षा देकर हम उन्हें आर्थिक स्वावलंबन की ओर ले जा सकते हैं। बतौर मार्गदर्शक और संरक्षिका इन 7 परियों को अच्छा वातावरण देते हुए उनकी भावनाओं को समझना और उनके भीतर की प्रतिभा को समझकर उन्हें इस दिशा में प्रेरित करना मेरा प्रमुख कार्य था। इस कार्य से हमें इन्हें नर्सिंग, योगा, एनिमेशन आदि क्षेत्रों में प्रवेश देने में भी सफलता मिली। मेरा विश्वास है कि ये बच्चे आर्थिक स्वावलंबन के साथ भविष्य में उच्च स्तर के सामाजिक सरोकारों से लैस होकर दूसरों की मदद के लिए आगे आएंगे। हमें गर्व है कि, हम उत्तरायण फाउण्डेशन और एनएचआई के साथ मिलकर इतने बड़े लक्ष्यों के लिए कार्य कर रहे हैं। इसके लिए डॉ ओ0 पी0 यादव, डॉ उषा यादव जी और हमारी टीम के सभी सहयोगी धन्यवाद के पात्र हैं।

श्रीमती चंद्रा ज़ाड़ू, सलाहकार, एनएचआई, नई दिल्ली

2 शब्द-

समाज में महिलाएं विभिन्न रूपों में भेदभाव का शिकार रही है। आधुनिक कहे जाने वाले इस समाज की मानसिकता आज भी रूढ़ीवादी है। महिलाएं आज पुरूषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है, इसके बावजूद भी महिलाएं अपराध, उत्पीड़न और उपेक्षा का शिकार होती आयी है। जहां एक ओर समाज में बालिकाओं का एक तबका शिक्षा, साहित्य व कला के क्षेत्र में अपना व समाज का नाम रोशन कर रहा है वहीं दूसरी ओर सभ्य व शिक्षित कहे जाने वाले इस समाज में कन्या भ्रूण हत्या के मामले भी कम नहीं है। हर उम्र की महिलाएं व बालिकाएं यौन शोषण, उत्पीड़न व दरिंदगी का शिकार होती जा रही है, समाज में महिलाओं को भोग की वस्तु समझा जाता है। महिला कल्याण विभाग में कार्य करते हुए देखने को मिलता है कि किस तरीके से बच्चों को लावारिस स्थिति में छोड़ा जाता है तथा बालिकाओं का शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न किया जाता है। राज्य महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित संस्थाओं में इन लावारिस, अनाथ, निराश्रित व पीड़ित बच्चों व महिलाओं की देखरेख, संरक्षण व शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। कुछ स्वयं सेवी संस्थाएं भी है इनमें से ही एक स्वयंसेवी संस्था एनएचआई और उत्तरायण फाउण्डेशन द्वारा बालिका निकेतन की 07 बालिकाओं को अपने संरक्षण में लेकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में अहम भूमिका निभाई जा रही है। हम इनके प्रयासों की प्रशंसा करते हैं और आशा हैं कि, इनके द्वारा भविष्य में ऐसे प्रयास होते रहेंगे। ऐसे ही विभिन्न प्रयासों के बाद आज समाज का एक हिस्सा बालिकाओं के जीवन व उनके सपनों के महत्व को समझ रहा है और उन्हें आगे बढ़ने में सहयोग कर रहा है। यही बालिकाएं आगे चलकर समाज के दृष्टिकोण में स्थायी परिवर्तन ला सकती है। शिक्षित महिलाएं सारे समाज को आत्मनिर्भर बनाती है।

सुश्री मंजू उपाध्याय, अधीक्षिका, राजकीय बालिका किशोरी गृह बख अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

2021 के प्रारंभ में अमन द्वारा माईथान गैरसैंण में एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जहां एन.एच.आई के प्रमुख डॉ ओ.पी. यादव एवं उनकी पत्नी रिटायर्ड प्रो. श्रीमती उषा यादव जी ने अपनी सेवायें इस अतिदूरस्थ क्षेत्र में दी। इस दौरान उत्तराखंड में कोविड महमारी के बाद निराश्रित बच्चियों की समस्या पर डॉ. ओ.पी. यादव की तरफ से सहायता करने की इच्छा व्यक्त की गई। अमन संस्था की कार्यकारी समन्वयक नीलिमा भट्ट एवं मेरे द्वारा उनके सम्मुख यह प्रस्ताव रखा गया कि, ऐसे बहुत बच्चे है जो जीवन मे किसी कारणवश पीड़ित हुए है या बिना मॉ-बाप के हैं और वो सरकारी व्यवस्था में विभिन्न बाल गृहों में देखभाल, आश्रय व संरक्षण हेतु निवास करते है। सरकारी व्यवस्था में सभी चीजें उपलब्ध होने के बावजूद भी इन बच्चों के जीवन में भावनात्मक, परिवार व सामाजिकता से जुड़े बहुत सारे अभाव रह जाते हैं। वहीं एक अति सुरक्षा घेरे में रहने के कारण उनका आत्मवि वास भी कम रह जाता है और दुनियां को देखने व समझने की दृष्टि का विस्तार भी नहीं हो पाता। इसलिए ऐसे बच्चो के साथ कार्य करने का प्रस्ताव हमारी ओर से उनके सम्मुख रखा गया। हलांकि हम जानते है कि, समाज में पितृसत्ता के कारण बहुत सारी बालिकाएं ऐसी परिस्थिति में धकेल दी जाती है और उनके मानवाधिकार भी उन्हें नहीं मिल पाते हैं। उनके साथ किसी भी तरह के अपराध करने वाले लोग पुरुष होने के कारण समाज में ही रहते है लेकिन बालिकाओं को सरकारी संरक्षण की व्यवस्थाओं में जाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इन बच्चों के साथ काम करने वाले अधिकांश चेरिटी और धार्मिक भावना से ही उनके साथ काम करते है। लेकिन उनके मानवाधिकारों को दृष्टि में रखकर एक इंसान और एक व्यक्तित्व के रूप में उनके अधिकारों

पर कार्य करते हुए उन्हें समाज में पुनर्स्थापित करने की दृष्टि कम ही संस्थाओं व संगठनों की उभर कर आती है। उत्तरायण फाउण्डेशन की इस दृष्टि को देखते हुए हमने उनके साथ मिलकर बच्चों को समाज में पुनर्स्थापित करने का कार्य शुरू किया जिसमें जिला संरक्षण अधिकारी, जिला बाल कल्याण समिति, जिलाधिकारी आदि लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। हालांकि स्थानीय स्तर पर बहुत सारी परेशानियां भी आयी जो कि लड़कियां को सीमित दृष्टिकोण से देखने के कारण उभर आयी लेकिन अंततः सात बालिकायें जीवन के नए आयाम में कदम रख पाने में सफल हुई। आज वे अपनी नयी उड़ान के लिए तैयार हैं जो उन्हें समाज में प्रतिस्थापित कर आत्मनिर्भर व एक मजबूत व्यक्तित्व बनाएगी। उत्तरायण फाउण्डेशन एवं एन.एच.आई. की इस नयी पहल और बालिकाओं को सशक्त कर आत्मनिर्भर बनने के इस कार्यक्रम के प्रति हमारी शुभकामनाएं।

रघु तिवारी
मुख्य कार्यकारी
सामाजिक संस्था 'अमन'

बेटी बचाओ -बेटी पढ़ाओ अभियान

आधी दुनियां, आधे आसमान की मालिक कही जाने वाली भारतीय महिलाएं खासकर निर्धन बालिकाओं की स्थिति भारत में किसी से छुपी नहीं है। आधुनिक विकास के दौर में राज्य व केंद्र सरकारों के अनेक प्रयासों के बाद भी यह तबका आज भी भय,भूख, असुरक्षा और अशिक्षा तथा सामाजिक असमानता का शिकार है।

यूनिसेफ द्वारा भारत को बाल लिंग अनुपात में दक्षिण एशियाई देशों की सूची में 41वाँ स्थान दिया है। लेकिन सरकार का बेटी पढ़ाओ- बेटी बचाओ अभियान बालिकाओं के प्रति समाज के नजरिए को बदलने में मदद कर रहा है। यह हमारा सौभाग्य है कि, हम भी इन प्रयासों में सक्रिय रूप से काम करने में जुटे हुए हैं। उत्तरायण फेथ फाउण्डेशन द्वारा अपने सामाजिक कार्यों की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए बीते साल से अल्मोड़ा किशोरी सदन उत्तराखण्ड से निर्धन व सामाजिक कारणों से प्रभावित बच्चों को सशक्त करने के अपने प्रयासों में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। इसमें नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली के सहयोग से कौशल विकास, पुर्नवास, सामाजिक पुर्नएकीकरण व समाज की मुख्य धारा के साथ जोड़ने हेतु बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान को चिरतार्थ कर रहा है। हमारा मानना है कि , इन प्रयासों को आपसे साझा करना अनिवार्य है, जो सामाजिक प्रेरणा का माध्यम बने।

वैसे तो फाउण्डेशन स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक कार्य करता रहा है। इसमें अनेक निर्धन और वंचित बच्चों के निःशुल्क स्वास्थ्य जॉच, ओपन हार्ट सर्जरी जैसे कार्य प्रमुख थे। लगभग दो दशक में यह सहयोग 200 से अधिक लोगों को देने में हम सफल हुए। कोविड काल में क्षेत्र के सुधी सामाजिक कार्यकर्ताओं की सलाह पर उत्तरायण फाउण्डेशन ने कुमाऊ मण्डल के विभिन्न जनपदों के अतिनिर्धन 300 परिवारों को उनके खातों में आर्थिक सहयोग देने के दौरान देखा कि कोविड काल में अनेकों बच्चे अपने परिवार के कष्टों के कारण अपना भविष्य गंवा रहे हैं। इस संकल्पना पर फाउण्डेशन ने पहले चरण में राज्य में कोविड प्रभावित बच्चों को ढूंढने के लिए अभियान चलाया। लगातार कई चरणों के लॉकडाउन के कारण दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावित बच्चों को लाना अत्यंत दुरूह कार्य रहा।

अल्मोड़ा अमन संस्था के सहयोग से विचार आया कि क्यों न किशोरी सदन अल्मोड़ा के बच्चों के बीच संभावनाओं को तराशा जाए। अनेक प्रयासों के बाद देखा गया कि यहां के बच्चे परिवार, समाज, सामाजिक उपेक्षा, अपराध शोषण और कोविड काल से सर्वाधिक

प्रभावित हैं। अपनी क्षमता अनुसार पहले चरण में हमने 10 बच्चों को अल्मोड़ा में शरण देकर जीवन निधि अभियान से जोड़ने का लक्ष्य रखा। लेकिन दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्र में उनके लिए संसाधन, शिक्षा का अच्छा माहौल व सुरक्षा की चुनौतियों के बीच तय किया गया कि इन बच्चों को दिल्ली ले जाकर पूरा संरक्षण दिया जाएगा।

उत्तराखंड प्रदेश में किसी संस्था द्वारा कोविड काल में सीधे बच्चों को मदद पहुंचाने का यह पहला प्रयास है । नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट द्वारा जीवन निधि कार्यक्रम के तहत गोद लिए प्रथम बैच में फाउण्डेशन 7 बच्चों के संरक्षकों और परिजनों को ही इस कार्य के लिए तैयार कर पाया। सभी सात बच्चों को वर्ष 2021 से आगे की पढ़ाई के लिए इंस्टिट्यूट में ठहराकर हॉस्टल/शिक्षा/स्वास्थ्य आदि सुविधाओं से लैस करने का प्रयास सफल बनाया। फाउंडेशन के अध्यक्ष व इस अभियान के प्रेरणता डॉ ओ० पी० यादव को भरोसा है की, बच्चे सशक्त बनकर समाज की मुख्य धारा में सम्मानजनक स्थान पाऐंगे।

जीवन निधि कार्यक्रम के उद्देश्य

- चयनित बालिकाओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना।
- इनके बीते अतीत के अवसाद और दुखों से इन्हें बाहर लाना।
- चयनित बालिकाओं के आत्मविश्वास और आधुनिक व परम्परागत ज्ञान से लैस कर कौशल विकास करना।
- सभी बालिकाओं की उच्च शिक्षा सुनिश्चित करना व सामाजिक और वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनाना ।
- शिक्षा के साथ-साथ बेटियों को अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ाने एवं उनकी इसमें भागीदारी को सुनिश्चित करना हैं।
- बालिकाओं को शोषण से बचाना व उन्हें सही/गलत के बारे में अवगत कराना।
- बालिकाओं का व्यक्तिगत विकास व अभिव्यक्ति को सुदृढ़ करना।

जीवन निधि कार्यक्रम हेतु फाउंडेशन के रणनीतियाँ

बीते वर्ष 2020-21 में अमन जैसी स्थानीय प्रतिष्ठित संस्था, बाल कल्याण समिति अल्मोड़ा और राज्य सरकार के उपक्रमों के सहयोग से किशोरी सदन अल्मोड़ा से आये सभी बच्चे नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली के आर्थिक एवं सामाजिक सहयोग से उनको जीवन के हर अवसरों को देने का प्रयास किया जा रहा है। किशोरी सदन तक पहुंची इन बच्चों के काले अतीत को किस प्रकार भूल कर मुख्यधारा में आएं इसके प्रयासों को प्राथमिकता से आगे बढ़ाया गया।

सभी कानूनी प्रक्रियाएं पूर्ण कर इन बच्चों को राज्य सरकार, अल्मोड़ा किशोरी सदन प्रबंधक, जिला बालविकास अधिकारी और जिलाधिकारी महोदय के सहयोग से दिल्ली लाने से पूर्व उनको दी जाने वाली सुविधाओं का आधिकारिक रूप से निरीक्षण करवाया गया।

फाउण्डेशन द्वारा इन बच्चों के परिजनों और इन बालिकाओं से व्यक्ति रूप से मिलकर उन्हें उनके भविष्य को लेकर लिए जा रहे निर्णय से अवगत करा कर उनसे सहमति ली गई।

दिल्ली पहुंचने पर इन बच्चों को सर्वप्रथम महानगरीय जीवन, परिवेश के प्रति सहज करने का प्रयास किया गया। इसके पीछे हमारी टीम ने इन बच्चों के समग्र विकास के लिए अनेक मनोवैज्ञानिक और वर्तमान शिक्षाशात्र की तकनीकों का सहारा लिया। इन बच्चों की मूल्यांकन प्रक्रिया में मूलभूत परिवर्तन कर किताबी ज्ञान के अलावा बच्चों का हेल्थ, इमोशनल, फिजिकल और सोशल असेसमेंट किया गया। इंस्टिट्यूट व फाउंडेशन द्वारा बच्चों का समग्र विकास कार्ड तैयार किया गया। साथ ही समाज में प्रतिष्ठित लोगों द्वारा इंस्टिट्यूट में आकर बच्चों के आगे बढ़ने का मनोबल बढ़ाया। जिससे कम समय में ही बच्चों में बड़े बदलाव आये और रूचि अनुरूप सभी बच्चे मेडिकल, कंप्यूटर एवं योगा में दिल्ली के विभिन्न संस्थानों में कौशल विकास व उच्च ले रहे हैं।

अनेक सफल उदाहरणों से रूबरू कर इन बालिकाओं को यह बताया गया कि आज बेहतर अर्थव्यवस्था और बेहतर समाज लड़कियों की शिक्षा का परिणाम है। शिक्षित बालिकाओं ने चिकित्सा, विज्ञान, कॉमर्स और प्रौद्योगिकी जैसे पेशेवर क्षेत्रों में योगदान देकर भारतीय समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाला है।

किसी को अपनी जिन्दगी खुद से बनानी होती है और जब हम अपने लिए ऐसा करते हैं तो बहुत सम्भावना है कि हम गलतियाँ भी करते हैं लेकिन ऐसे में अपनी गलतियों से सबक लेना चाहिए और अपने अतीत की गलतियों को कभी आड़े नहीं आने दें।

गलती से सीखकर आगे बढ़ें

बच्चों को सिखाया गया कि, वर्तमान में जो लोग सफल हैं उन्हें विरासत में कुछ अधिक नहीं मिला ,उन्होंने अपना साम्राज्य खुद ही खड़ा किया है । इसलिए ऐसा नहीं सोचे कि आपके पास समय कम है या संसाधन कम है बल्कि पूरे उत्साह से अपनी दिशा में काम करें । ये कुछ खासियतें हैं जो सफल लोगों को भीड़ से अलग करती हैं। अपनी गलतियों से सीखें और आगे बढ़े।

नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट (एनएचआई)के सफलता मंत्र

फरवरी 2021 में नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के पूर्व चेयरमैन सुधीर चंद्रा द्वारा बच्चों को सफलता के गुर सिखाए नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट वर्तमान में कोविड काल में हुए अनाथ, निर्धन व निराश्रित बच्चों को गोद लेकर उन्हें उच्च , शिक्षा प्रदान कर रहा है, इस मुहिम को आगे बढ़ाते हुए एनएचआई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ ओपी यादव के आह्वान पर भारत के पूर्व आई.आर. एस अधिकारी सुधीर चंद्रा द्वारा नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट आकर इन बच्चों को जीवन में सफलता पाने के गुर सिखाये । कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि आज बेहतर अर्थव्यवस्था और बेहतर समाज लड़कियों की शिक्षा का परिणाम है। शिक्षित बालिकाओं ने चिकित्सा, विज्ञान, वाणिज्य और प्रौद्योगिकी जैसे पेशेवर क्षेत्रों में योगदान देकर भारतीय समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। उन्होंने बच्चियों से खुद को समझने और जानने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि "अपने भविष्य का निर्माण करने वाले आप खुद है इसलिए आप खुद से पूछें कि आप क्या बनना चाहते हैं उसी दिशा में अपनी सारी शक्ति लगा दें। यदि आप खुद के बारे में जान लेते हैं तो सफल होने में देर नहीं लगती इसलिए सबसे पहले सफल होने के लिए आप खुद को जानें।"

बच्चे महत्वाकांक्षी बनें – श्री राज भट्ट सीईओ इलारा कैपिटल

बच्चे स्वयं के भविष्य निर्माता– सुधीर चंद्रा पूर्व आई.आर.एस.

बच्चों से भेंट के दौरान श्री राज भट्ट सीईओ इलारा कैपिटल, लंदन साथ में डॉ ओ पी यादव सीईओ एन एच आई, विंग कमांडर बी जेना, श्रीमती चंद्रा जाडू व दीपा चुग ने बच्चों को निम्न महत्वपूर्ण बातों से प्रेरित किया।

ज़िन्दगी में जीत और हार तो हमारी सोच बनाती है, जो मान लेता है वो हार जाता है, को ठान लेता है वो जीत जाता है। आपके विचार व मुंह से निकले बोलों में आपका भविष्य छिपा होता है और आप कल कहां पहुंचेंगे यह आपकी विचारों व मुंह से निकलने वाले शब्दों से पता चलता है क्योंकि जो आप बोलते हैं, वह मन के भीतर छिपे विचारों की आवाज होती हैं।

मेहनत हमेशा रंग लाती है, लेकिन आपको विश्वास होना चाहिए कि मै किसी भी काम को कर सकती हूं, इसलिए उस रहस्य को जानने कि कोशिश कीजिए, जों आपको सफलता का रास्ता दिखाएं। किसी भी लक्ष्य को हासिल करने के लिए मेहनत करना जरूरी है पर उससे कहीं ज्यादा जरूरी है कठिन परिस्थितियों में खुद पर नियंत्रण रखना। परीक्षा सिर्फ आपके जीवन का एक हिस्सा है, इसे ज़िन्दगी ना बनाएं। सफलता के लिए विश्वास, विश्वास के लिए दृढ़-संकल्प जरूरी है ज़िन्दगी एक दौड़ है, दौड़ है, तो होड़ है, लेकिन होड़ का मतलब फर्स्ट आना कतई नहीं है, बल्कि दौड़ना है दौड़ में बने रहने से आप किसी स्थान पर तो पहुचेंगे ही। सफलता का मूल्य मेहनत है, और काम में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देने के बाद जितने और हारने का मौका भी आपके हाथों में है। इसलिए महत्वाकांक्षी बनिए, महत्वकांक्षा सफलता के पथ और मंजिल के बीच का सफर तय करने में हमेशा काम आती हैं।

श्री राज भट्ट सीईओ इलारा कैपिटल लन्दन ने मुनस्यारी उत्तराखंड की दिव्या

राणा के फुटबॉल खलेने के जूनून से बच्चों को प्रेरणा दी और बताया कि जुनून का होना सफलता की कुंजी हैं क्योंकि यह एक ऐसा गुण है, जो आपके लिए सफलता के द्वार खोल देता है और हर चीज को संभव बना देता है, जुनून होने पर सामान्य व्यक्ति भी शिखर पर पहुंच सकता है, सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करती है कि आप क्या करते हैं और क्या प्राप्त करते हैं, बल्कि इस बात पर ज्यादा निर्भर करती हैं की आपके अंदर जुनून कितना है। उत्तराखंड के एक छोटे से गांव से निकली 16 साल की दिव्या राणा महिला फुटबॉल में अपना जलवा विखेर रही है। उन्होंने बच्चों से महत्वाकांक्षी संकल्प लेने को कहा और अपने तमाम अनुभवों को बताते हुए कहा यदि आप महत्वाकांक्षी सोच के साथ जीवन मैं आगे बढ़ोगे ईश्वर आपको कोई न कोई रास्ता अवश्य प्रदान करेगा।

मिस यूनिवर्स हरनाज संधू से रूबरू हुई बालिका निकेतन की जुझारू बालिकाएं

उत्तरायण फाउण्डेशन की पहल पर नेशनल हार्ट इस्टीटयूट में उत्तराखण्ड के बच्चों को मिस यूनिवर्स हरनाज संधू से मिलने का अवसर मिला। एनएचआई में स्माईल ट्रेन अभियान की ब्राण्ड एम्बेस्टर के तौर पर जुलाई 2022 में पहुंची विश्व सुंदरी ने नेशनल हार्ट इंस्टीटयूट में चल रही जन स्वास्थ्य सम्बंधी गतिविधियों की जमकर सराहना की। इस अवसर पर देश भर से आए कटे होंठ और तालू आदि के साथ हृदय रोगों का निःशुल्क उपचार ले रहे बच्चों से मिलकर उन्होंने इस प्रयास को उल्लेखनीय बताया। मौके पर एनएचआई के सीईओ एवं वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ ओ पी यादव व उनकी टीम ने विस्तार से मिस यूनिवर्स को संस्थान की गतिविधियों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि अब तक देश के विभिन्न भागों से 305 से अधिक बच्चों को संस्थान के शल्य चिकित्सक डा0 करूण अग्रवाल नई मुस्कान दे चुके हैं। इस अवसर पर डॉ0 यादव ने उत्तराखण्ड के दूरस्थ गांवों में उत्तरायण फाउण्डेशन के सहयोग से चले रहे जन स्वास्थ्य के कार्यक्रमों के बारे में बताया ।

इस अवसर पर संस्थान द्वारा गोद ली गई उत्तराखण्ड से अल्मोड़ा बख बालिका निकेतन की 7 बालिकाओं ने मिस यूनिवर्स से मुलाकात की और उन्हे भेंट देकर अपने अनुभव साझा किए। उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों से बाल विकास विभाग के माध्यम से आई बालिकाओं

रेखा, बबीता, सुनीता, लक्ष्मी, कोमल, तनूजा आदि ने मिस यूनिवर्स हरनाज संधू से मिलकर बात की और उन्हें खुद का बनाया ग्रीटिंग कार्ड दिया। कुछ बच्चों ने आत्मविश्वास से मिस यूनिवर्स से अंग्रेजी में बात की। बच्चों से प्रभावित होकर मिस यूनिवर्स हरनाज कौर ने कहा कि वह बच्चों की इस भेंट को सदैव अपने पास रखेंगी। कौर ने ऑल इण्डिया हार्ट फाउण्डेशन द्वारा 70 के दशक से एशिया में किए गए प्रयासों को जाना और डॉ यादव व उनकी टीम के भारत में हृदय और अन्य रोगों के निदान के लिए किए जा रहे प्रयासों को असाधारण बताया। मिस यूनिवर्स ने मौजूद बच्चों को गले लगाकर स्वागत किया और सदैव उनका उत्साह बढ़ाने का वादा किया। उन्होंने कहा कि हर बच्चें के चेहरे पर मुस्कान जरूरी है और कहा कि डॉ यादव इस प्रयास में लगातार नए आयाम जोड़ रहे है। उन्होंनें कहा कि वह ख्याति प्राप्त होने से पूर्व से इन प्रयासों से जुड़ी है और इसमें अभिभावकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्होंने सफलता पूर्वक शल्य करा चुके बच्चों के अभिभावकों से कहा कि स्माईल ट्रेन और एनएचआई जैसे संस्थानों द्वारा दी जा रही इस निःशुल्क सेवा का लाभ लें और हर जरूरतमंद बच्चों को इससे जोड़ें। इस अवसर पर उत्तरायण फाउण्डेशन के सचिव महिपाल पिलख्वाल ने बताया कि उत्तराखण्ड से दिसम्बर 2021 में यहां पहंचे बच्चों की शिक्षा और कौशल विकास के साथ हॉस्टल की उचित व्यवस्था के बाद ये बच्चे लगातार आगे बढ़ रहे है। अभिरूचियों के अनुसार बच्चों का दिल्ली में स्कूल एडमिशन व अन्य कौशल विकास के पाठ्यक्रम शुरू कर दिए गए हैं। उन्होंने उत्तराखण्ड से जुड़े सभी जनप्रतिनिधियों व प्रदेश के मुख्यमंत्री को भी इस प्रयासों से अवगत कराने और शीघ्र दिल्ली में इन बच्चों के बीच उन्हें बुलाने की योजना पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर पर संस्थान से विग कमाण्डर जैना, चंद्रा जाडू, प्रियंका दत्ता, श्वेता सिंह, दिव्या तोमर सहित अनेक चिकित्सों व स्टाफ ने कार्यक्रम में भाग लिया।

कुछ ऐसे चला बच्चों के जीवन का सफर

उत्तरायण फाउण्डेशन के सहयोग से यहां पहुची बालिकाओं में उत्तराखण्ड की बागेश्वर जनपद की रेखा, पिथौरागढ़ जनपद से तनूजा, रूद्रपुर से लक्ष्मी और कोमल, अल्मोड़ा से बबीता, और पिथौरागढ़ जनपद से बबीता और सुनीता बहने अपने नए जीवन की शुरूआत कर रही है।

माह दिसम्बर 2021 में ये बच्चे दिल्ली आए और तब से लगातार महानगरीय जीवन में जीवन के आगे बढ़ने के संघर्षों से जूझ रहे हैं। चूंकि ये बच्चे एक राजकीय शरणालय में थे। वहां समूह में इन बच्चों के व्यक्तिगत विकास की संभावनाएं शून्य थी। किशोरी सदन के भवन की दीवारों और स्कूल की कक्षाओं के बीच इनका जीवन कटता था। अनेक बच्चों ने पढ़ने की डर से अंग्रेजी विषय से इतिश्री कर ली थी। अनेक बालिकाएं कहने को इंटर पास थी लेकिन सामान्य ज्ञान से भी वंचित थी। इसके अतिरिक्त वे अनेक प्रकार की शारीरिक दुर्बलताओं से मनोवैज्ञानिक दबावों से भी जूझ रही थी।

नेशनेल हार्ट इंस्टिट्यूट ने बच्चों की इस स्थिति और मनोविज्ञान को देखते हुए शुरू से ही बच्चों को पौष्टिक भोजन ओर सकारात्मक वातावरण से रूबरू कराया। इसमें दिल्ली का भ्रमण, अच्छे संस्थानों और ऐतिहासिक व शैक्षिक स्थलों का भ्रमण, प्रमुख था। बाजारों की रौनक से लेकर पुस्कालय, चिडियाघर आदि सभी रोचक स्थानों पर बच्चों को ले जाया गया। स्कूल कालेजों व विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में प्रवेश से पूर्व उनकी अंग्रेजी, व्यक्तिगत विकास आदि की अनेक कक्षाएं चलाई और उन बच्चों को मुख्यधारा से रूबरू कराया गया।

बच्चों को विषयवार जीवन में रोजगार और संभावनाओं की जानकारी दी गई और उन्हें स्वयं अपनी अभिरूचि के अनुरूप आगे की पढ़ाई और कौशल सीखने के निर्णयों को लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। आज के दौर की पहली आवश्यकता कंप्यूटर के ज्ञान से उन्हें सर्वप्रथम जोड़ा गया। फलस्वरूप आज बच्चे आत्मनिर्भरता, कौशल, ज्ञान अर्जन के साथ व्यक्तिगत सपनों के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

तनुजा (20)

अब मैं बड़े सपने देख सकती हूँ और उन्हें पूरा करने की हिम्मत भी आ रही है। थेंवस यादव सर

तनुजा तब.....

कक्षा 12 उत्तीर्ण होने तक तनुजा किशोरी गृह अल्मोड़ा में रहती थी। वह एक औसत छात्रा थी। बालगृह का जीवन उसके लिए मजबूरी था। उसके जीवन में अनेक ख़्वाब थे। वह प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती थी। लेकिन पढ़ाई में औसत थी। अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान में भी वह सामान्य से कम थी। परिवेश और अवसर न मिलने के कारण उसका व्यक्तिगत विकास ठप्प सा हो गया था और वह स्वयं को अभिव्यक्त तक नहीं कर पाती थी।
एकांकी और शंकाओं से घिरे रहने के कारण उसे स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं से भी जूझना पड़ता था।

तनुजा अब.....

आज तनूजा अपने बैच की सर्वाधिक आत्मविश्वासी लड़कियों में गिनी जाती है। सामान्य ज्ञान, अंग्रेजी, पब्लिक विहेब्यर आदि में उसने एक साल में बहुत मेहनत की और अब वह कहीं भी बेझिझक जा आ सकती है। दिल्ली से अल्मोड़ा अकेले आना और यहां आकर अपने बैंकिंग, स्कूल आदि के काम करना, दिल्ली मैट्रो आदि में सफर करना, एनएचआई में हेल्थ वर्कर प्रेक्टिस करना, रोगियों और तीमारदारों से बातचीत करना तथा अपनी कक्षाओं आदि में लगातार सहभागी बनने से अब वे आत्मविश्वास से लबरेज है। वर्तमान में तनूजा मूलचंद हॉस्पिटल दिल्ली से जी.एन.एम .का कोर्स कर रही है की और उसका सपना है कि, वह इस क्षेत्र में मेहतन कर अपना कैरियर बनाए। आज तनूजा खुद और अपने जीवन को संवार रही है। उसे पहड़ और अपने गांवों से लगाव है और उसका कहना है कि, जिस प्रकार एनएचआई और फाउण्डेशन के लोग उनकी मदद कर रहेहैं, उत्तराखण्ड से भी बड़े लोग आकर उनका हौसला बढ़ाएं।

रेखा (20)

दुनिया कितनी बड़ी है यहां आकर जाना । उत्तरायण फाउण्डेशन का शुक्रिया

रेखा तब.....

कक्षा 12 पास चुकी रेखा भी अल्मोड़ा किशोरी गृह में रहती थी। वह एक होशियार छात्रा थी लेकिन अच्छी शिक्षा के अभाव में बालगृह में उपलब्ध संसाधनों के साथ पढ़ाई करती थी। बड़ी होने के साथ वह अपने भविष्य को लेकर बहुत चिंतित थी। वह प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती थी। लेकिन औसत दर्जे की पढ़ाई से कुछ संभव नहीं था। अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान में भी वह सामान्य से कम थी। परिवेश और अवसर न मिलने के कारण उसका व्यक्तिगत विकास ठप्प सा हो गया था और वह स्वयं को अभिव्यक्त तक नहीं कर पाती थी।
अकेले और शंकाओं से घिरे रहने के कारण उसे स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं से भी जूझना पड़ता था।

रेखा अब.....

रेखा कोरंगा वर्तमान में मूल चंद हॉस्पिटल से जी एन एम का कोर्स कर रही है। वो कहती हैं, मुझे बचपन से ही पढ़ाई व क्राफ्ट वर्क में बेहद दिलचस्पी रही है।, मेरी अभिरुचि प्रशासनिक सेवा में जाने का थी परन्तु ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव के कारण में वो सब नहीं कर पायी जिसे मैंने कभी जिया था। बालिका निकेतन में आना मेरे लिए एक दुनिया से दूसरी दुनिया में आने जैसा था। लेकिन यहां मिले केयर एवं अपनेपन ने मेरा मन बदल दिया और में अपनी 12वीं तक की पढ़ाई पूरी कर पाई। लेकिन ये सब मेरे सपनों को पूरा करने के लिए ना काफी थी। एक दिन सीडब्लूसी अल्मोड़ा की को ऑर्डिनेटर नीलिमा भटट जी का फोन आया और मुझे बताया गया आप को आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली जाना है क्या आप जायेंगे । पहले तो मुझे यकीं नहीं हुआ। लेकिन मेरे पास आगे बढ़ने के लिए इससे बेहतर अवसर शायद ही कभी और मिलता। और में पिछले 01 दिसंबर 2021 को दिल्ली आ गयी। उत्तरायण फाउंडेशन की तहेदिल से शुक्रिया करुँगी कि उन्होंने मेरे सपनों को फिर जिन्दा कर दिया है आज में वो सब कर रही हूँ जो मेरे लिए पहले एक सपना जैसा था। थैंक्स डॉ उषा यादव, श्रीमती चंद्रा जाडू, डॉ ओपी यादव, डॉ विनोद शर्मा एवं महिपाल पिलख्वाल जी का।

बबीता आर्या (19)

हॉ, अब मै आत्मविश्वास से आगे बढ रही हूँ। थैक्स एनएचआई

बबीता तब.....

बबीता एक संकोची स्वभाव की लड़की थी। परिवार और उसके जीवन की परिस्थितियों ने उसे समय से पहले व्यस्का सा बना दिया था। वह एकांकी जीवन व्यतीत करती थी लेकिन उसे अन्य लड़कियों की भॉति अपने सपनों को पंख लगाने के अवसर चाहिए थे।
अपनी परिवार के प्रति गहरी संवेदना रखने वाली बबीता पढ़ाई में उतना अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाती थी। अंग्रेजी, कंप्यूटर आदि के साथ खेल में वह अभिरूचि रखती थी। लेकिन उसे उम्मीद नहीं थी कि, उसे इसका अवसर मिलेगा।

बबीता अब.....

बबिता वर्तमान में दिल्ली नर्सिंग काउंसिल से ए एन एम का कोर्स कर रही है। वो कहती हैं ज़िंदगी मुझे नचा रही थी और में नाँच रही थी ये तब तक चला जब तक में बालिका निकेतन अल्मोड़ा नहीं पहुंच गयी-बालिका निकेतन, जिसने मुझे संभाला और मुझे पड़ा-लिखाकर शिक्षित बनाया, जिंदगी में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। डॉ यादव व डॉ विनोद शर्मा मेरी जिंदगी में भगवान् बनकर आये हैं ये मेरा सौभाग्य है की मुझे कदम-कदम पर उनका मार्गदर्शन मिल रहाहै। उनके द्वारा हमें दिल्ली जैसे बड़े शहर में उच्चशिक्षा व कौशल विकास हेतु तन मन धन से मदद हो रही है। उसे अपनी मॉ से अत्यधिक लगाव है और वह मॉ के लिए कुछ करना चाहती हैं।

बबीता मेहता(21)

कभी सोचा न था
यहां आएंगे और
जीवन सामान्य होगा।
थेवस महिपाटा सर

बबीता तब.....

बबीता बेहद संवेदनशील लड़की है, अवसर न मिल पाने के कारण वह अपनी इच्छानुसार पढ़ाई नहीं कर पाई। वह अपने परिवार खासकर माँ के प्रति गहरी सहनुभूति रखती है और उसकी इच्छा है कि, वह खूब पढ़े और आत्म निर्भर बने। पढ़ाई में औसत और संकोची स्वभाव की बबीता परिस्थितियों के आगे मजबूर थी।

बबीता अब.....

बबिता वर्तमान में दिल्ली नर्सिंगकाउंसिल से ए.एन.एम का कोर्स कर रही है। वो कहती हैं जिंदगी को पीछेमुड़कर देखती हूँ तो काफी उथल-पुथल रही है बालिका निकेतन अल्मोड़ा ने सहारा दिया, लेकिन घर की बड़ी होने के नाते अनायास ही मनमस्तिष्क में माँ और अन्य छोटी बहनों के प्रति जिम्मेदारी का अहसास मुझे परेशांन कर देती थी। मन में बार-बार ख्याल आता था कि क्या कभी में परिवार का सहारा बन पाऊँगी, कैसे संभव हो पायेगा। आज मन के किसी कोने में एक दिया जला है में बहुत आशावादी तो नहीं हूँ फिर भी उत्तरायण फाउंडेशन एवं नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट की पहल ने मुझे जीवन में आगे बढ़ने का हौंसला दिया है शायद अब में इन हौंसलों की मदद से खुद की व परिवार की जिंदगी बदल सकती हूँ।भगवान् से प्रार्थना है कि उन सभी लोगों को दुनिया जहाँ की खुशियाँ दें, जिन्होंने मेरे मन में आशा की नई लौ को प्रज्जल्वित कर दिया है। मुझे अपनी बहनों और माँ के लिए बहुत कुछ करना है।

कोमल शर्मा (19)

एनएचआई और फाउण्डेशन हमें नैनीहाल जैसा लगता है, प्यार भी अधिकार भी।चंद्रा जादू मैडम का आभार

कोमल तब.....

कोमल पढ़ाई में अत्यधिक कमजोर थी और स्कूली शिक्षा से न तो उसका व्यक्तित्व विकास हो पाया था और न ही उसके ज्ञान में इजाफा। वह ट्यूशन पढ़ना चाहती थी। खेल के प्रति अपनी अभिरूचियों को आगे बढ़ना चाहती थी , साथ ही साथ व क्रियेटिविटी के कामों में भी रूचि रखती थी लेकिन उसे अवसर न मिलने से वह सदैव मायूस रहती थी।

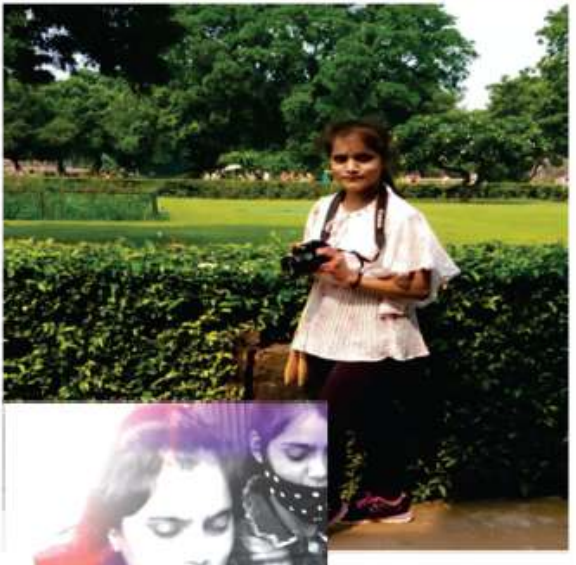

कोमल अब.....

कोमल वर्तमान में इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी से अपनी उच्च शिक्षा ले रही है साथ ही मास कम्युनिकेशन एण्ड एरीना मल्टीमीडिया 3-डी एनीमेशन, वीएफ़एक्स, ग्राफ़िक व वेब डिजाइनिंग में एडवांस्ड ट्रेनिंग ले रही है। वो कहती है में हमेशा से आशावादी रही हूँ। बचपन में माँ-बाप के साये के लिए तरसती रही। बालिका निकेतन अल्मोड़ा ने मुझे हमेशा हौंसला दिया और अब नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट व उत्तरायण फेथ फाउंडेशन उन हौसलों को पंख लगाने का कार्य कर रही है। मुझे यकीन नहीं होता है कि 'मैं आज अपने सपनों को साकार होते हुए देख रही हूँ। में बहुत जज्बाती हूँ उन सभी लोगों का तहेदिल से शुक्रिया और बहुत बहुत आभार जिनकी वजह से आज में यहाँ पर हूँ। चंद्रा मैडम का संरक्षण मुझे मिला उसके लिए मैं उन्हें विशेष आभार देती हूँ।''

लक्ष्मी शर्मा (18)

मैं अब पढ-लिखकर आगे बढूंगी, हमें यहां परिवार से अधिक केयर मिल रही है। थैंक्स विनोद शर्मा सर

लक्ष्मी तब.....

बेहद निर्धन परिवार की लक्ष्मी पढ़ाई में सामान्य थी। अच्छी शिक्षा और अच्छे स्कूल के लिए वह सदैव तरसती थी। उसका परिवार के प्रति भी गहरा लगाव है। वह पढ़ लिखकर आत्मनिर्भर बनना चाहती थी। लेकिन बालिका निकेतन में वह अपने जीवन को अंधकारमय मानती थी। उसे लगता था कि हमें सिर्फ यहां बड़े होने के लिए रखा गया है। वह अनेकों बार सोचती थी कि मैं इस निकेतन से भी कहीं दूर चली जाउं लेकिन उसके पास कोई विकल्प नहीं था।

लक्ष्मी अब.....

लक्ष्मी वर्तमान में दिल्ली फार्मास्यूटिकल साइंसेज व रिसर्च यूनिवर्सिटी से योगा का एडवांस्ड कोर्स कर रही है । वह कहती है कि , मेरा सपना था कि में किसी बड़े संस्थान से योगा की बारीकियों को सीखकर बाहर देश में नौकरी करू, मुझे लगता है कि अब में अपनी मंजिल को हासिल कर लुंगी। मुझे इस मुकाम तक पहुंचाने में डॉ. ओ पी यादव एवं डॉ विनोद शर्मा जी असीम कृपा है में सदैव ही उनका आभारी रहूंगी। और भगवान् से प्रार्थना है कि मेरी जैसी सभी बच्चों का

सुनीता मेहता (19)

मैं एक दिन बड़ी बनकर जरूर यादव सर की तरह दूसरों की मदद करूंगी। पक्का ,थैंक्स डॉ उषा मैडम

सुनीता तब.....

सुनीता भी हालातों के कारण निकेतन पहुंची थी। वह पढ़ाई के साथ अन्य गतिविधियों में रूचि रखती थी। उसे खेलना, घूमना और सांस्कृतिक गतिविधियों में रूचि थी लेकिन उसे काई अवसर नहीं मिलता था। होमगार्ड के पहले में स्कूल जाना और फिर अपने सेंटर आना उसके जीवन में निराशा भरा दौर था। वह अकसर सोचती थी कि उसे बिना बात के माँ -पिता और परिवार के प्यार से वंचित रहना पड़ रहा है। वह उसे अपनी नियति मानने लगी थी।

सुनीता अब.....

सुनीता वर्तमान में दिल्ली नर्सिंग कौंसिल से ए एन एम का कोर्स कर रही है। वो कहती हैं मेरी जिंदगी में बालिका निकेतन अल्मोड़ा का बहुत योगदान है। जहां मैंने अपनी जिंदगी के बहुमूल्य समय का उपयोग कर अपनी सेकेंडरी शिक्षा पूरी की। बालिका निकेतन ने माँ-बाप की कमी को पूरा किया। उत्तरायण फेथ फाउंडेशन से डॉ उषा यादव एवं डॉ ओ पी यादव जी जब बालिका निकेतन हमसे मिलने आये तो, मुझे यकीन ही नहीं हुआ की में आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली जा रही हूँ। मन में कई सवाल थे कैसे बड़े शहर में अपने को एडजस्ट करुँगी ? मुझे पता था की में ठीक से बात भी नहीं कर पाती, मेरी आवाज मुँह में दबकर रह जाती है लेकिन नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट ने मुझे वो ताकत दी है कि आज में सभी से आत्मविश्वास के साथ बात करती हूँ समाज के प्रति मेरा नजरिया बदल गया है , ये सब हुआ है डॉ. ओ .पी. यादव एवं उनकी टीम के खूब प्रयासों से।

निराश्रित बच्चों का जीवन सुधारेगा उत्त

अल्मोड़ा। नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट नई दिल्ली के सहयोग से उत्तरायण फाउंडेशन ने निराश्रित बच्चों को जीवन सहयोग निधि देने के लिए दिल्ली बुलाया है। बाल कल्याण समिति और बालिका निकेतन के अधिकारियों ने बच्चों को नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट पहुंचा दिया है। ज्ञातव्य है कि अपने सामाजिक कार्यों की श्रृंखला में उत्तराखंड फाउंडेशन ने कोविड काल में निर्धन व सामाजिक कारणों से प्रभावित बच्चों को गोद लेने की योजना बनाई। अमन संस्था के प्रयासों ... व महिला एवं बाल विकास ... बच्चों का चयन ...

... क्षेत्रों में कौशल ... योजना बनाई है।

अमन प्रमुख ... कल्याण समिति ... से संपर्क बनाए रखे ... परिजनों से भी ... बताया कि बीते ... संभव हो पाया है। ... विकास, पुनर्वास ... इंस्टीट्यूट के प्रमु... आकर इन बच्चों ... दिलाया कि फा...

अल्मोड़ा से 7 बच्चियां पहुंचीं दिल्ली

निराश्रित बच्चों का जीवन सुधारेगा उत्तरायण फाउण्डेशन

बेसहारा बालिकाओं का सहारा बना नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट

आत्मनिर्भर

- रोजगार परक प्रशिक्षण देकर बनाया जाएगा आत्मनिर्भर
- अधिकारियों ने दिल्ली जाकर व्यवस्थाओं का लिया था जायजा

अमृत विचार, अल्मोड़ा

डा. ओपी यादव के साथ अल्मोड़ा के बाल निकेतन से प्रशिक्षण प्राप्त करने दिल्ली पहुंची बालिकाएं। • अमृत विचार

कोविड काल के बाद अपने माता पिता को खो चुके और बाल निकेतन में रह रही सात बेसहारा बालिकाओं की मदद के लिए नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली ने हाथ बढ़ाया है। इंस्टीट्यूट ने सात बालिकाओं को उनकी रुचि अनुसार प्रशिक्षण दिलवाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का जिम्मा अपने कंधों पर लिया है। अधिकारियों द्वारा दिल्ली में इन बालिकाओं के लिए की गई व्यवस्थाओं का जायजा लेकर उन्हें दिल्ली भेज दिया है।

गुरुवार को बाल कल्याण समिति और बालिका निकेतन के अधिकारियों ने सात बालिकाओं को दिल्ली नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट पहुंचा दिया है। नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट के सीईओ व वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ डा. ओपी यादव ने बीते साल से ही कोविडकाल में माता पिता को खो चुके व निर्धन परिवारों के बच्चों को गोद लेने की पहल शुरू की थी। राज्य सरकार के विभिन्न संस्थानों की अनुमति के बाद लगभग 10 बच्चे प्रथम चरण में चुने गए। जिसके बाद बालिका निकेतन से वयस्क हो चुके 10 बालिकाओं को दिल्ली भेजने का निर्णय लिया गया। बाल संरक्षण अधिकारी राजीव नयन तिवारी ने बताया कि बाल विकास अधिकारी के साथ स्वयं उन्होंने दिल्ली जाकर बच्चों की व्यवस्था का जायजा लिया और नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट की व्यवस्था व योजनाओं से संतुष्ट होकर बालिकाओं को उन्हें सौंपने का निर्णय लिया। बालिकाओं की विशेष काउंसलिंग भी की गई।

प्रशिक्षण के दौरान दिया जाएगा मानदेय

अल्मोड़ा। बाल निकेतन से बेहतर भविष्य की उम्मीद लगाए दिल्ली पहुंची बालिकाओं को विभिन्न प्रकार के रोजगारपरक प्रशिक्षण के दौरान मानदेय दिए जाने की व्यवस्था भी की गई है। फाउंडेशन के महिपाल पिलख्वाल ने बताया है कि बाल कल्याण समिति सहित अन्य संस्थाएं निरंतर बच्चों से संपर्क बनाए रखेंगी। जबकि प्रशिक्षण के इन बालिकाओं को वहां ले जाएगा। उन्होंने कहा है कि संस्था का प्रयास इन बालिकाओं को बेहतर प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाना है।

उत्तरायण फाउंडेशन ने इस बच्चों की शिक्षा के साथ उन्हें दिल्ली में रखकर चिकित्सा आदि क्षेत्रों में कौशल विकास कर रोजगार देने की योजना बनाई है।

गुरुवार

दिनांक- 2 दिसम्बर 2021

निराश्रित बच्चों का जीवन सुधारेगा उत्तरायण फाउण्डेशन, अल्मोड़ा से सात बच्चियां पहुंची दिल्ली में

अल्मोड़ा। नेशनल हार्ट इंस्टीटयूट नई दिल्ली के सहयोग से उत्तरायण फाउण्डेशन ने उत्तराखण्ड में निराश्रित और प्रभावित बच्चों को जीवन सहयोग निधि देने के लिए नई दिल्ली बुला लिया है।गुरुवार को बाल कल्याण समिति और बालिका निकेतन के अधिकारियों ने विधिवत् बच्चों को दिल्ली नेशनल हार्ट इंस्टीटयूट पहुंचा दिया है।दिल्ली पहुंचकर बच्चे अत्यधिक उत्साहित है और अपने जीवन के ख्वाब बुनने लगे हैं।ज्ञातव्य है कि अपने सामाजिक कार्यों की श्रंखला में उत्तराखण्ड फाउण्डेशन ने उत्तराखण्ड में कोविड काल में निर्धन, व सामाजिक कारणों से प्रभावित बच्चों को गोद लेने की योजना बनाई। अमन संस्था के प्रयासों से बाल कल्याण समिति व महिला एवं बाल विकास विभाग के सहयोग से इस प्रकार के बच्चों का चयन किया गया। लंबी कागजी प्रक्रिया और राज्य सरकार के विभिन्न संस्थानों

निर्णय लिया। इसके लिए बच्चों से विशेष काउंसलिंग भी की गई।उत्तरायण फाण्डेशन ने इस बच्चों की शिक्षा के साथ उन्हें दिल्ली में रखकर चिकित्सा आदि क्षेत्रों में कौशल विकास कर रोजगार देने की योजना बनाई है।अमन प्रमुख रघु तिवारी ने बताया कि बाल कल्याण समिति सहित अन्य संस्थाएं निरंतर बच्चों से संपर्क बनाए रखेंगी और समय समय

करेगा। नेशनल हार्ट इंस्टीटयूट के प्रमुख डॉ ओ० पी० यादव ने स्वयं अल्मोड़ा आकर इन बच्चों से मुलाकात की और उन्हें भरोसा दिलाया कि फाउण्डेशन इस बच्चों को सशक्त बनाकर समाज की मुख्य धारा में सम्मानजनक स्थान दिलाएगा। फिलहाल सात बच्चे कल यानि बुधवार को दिल्ली पहुंच गए है।अपनी आगामी परीक्षा के बाद अन्य बच्चे भी वहां जाएंगे।प्रदेश में किसी संस्था द्वारा कोविड काल में सीधे बच्चों को मदद पहुंचाने का यह पहला प्रयास है। जिला बाल संरक्षण अधिकारी राजीव नयन,अमन प्रमुख रघु तिवारी,बाल कल्याण समिति की नीलिमा भट्ट व प्रशांत जोशी,अधीक्षिका मंजू उपाध्याय सहित सभी ने उत्तरायण फाण्डेशन अध्यक्ष डॉ ओ० पी० यादव व महासचिव महिपाल यादव का आभार जताया है। इधर उत्तरायण फेथ फाउंडेशन के सचिव महिपाल सिंह पिलख्वाल ने बताया कि कोविड काल से ही संस्था लगातार

दस बेटियों का भविष्य सुधारेगी दिल्ली की संस्था

अपील

नमस्कार मित्रो,

बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ अभियान समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस अभियान को एक कदम आगे बढ़ाकर उत्तरायणा फाउंडेशन एवं नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट बेटियों को न केवल शिक्षा बल्कि मेडिकल, कंप्यूटर, योगा जैसे क्षत्रों में कौशल विकास प्रदान कर अपने पैरों में खड़ा भी कर रहा है। बेटियों की शिक्षा-दीक्षा भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है, ताकि हर बेटी सक्षम होकर किसी जरूरतमंद बेटी को शिक्षित बनाकर उसे अपने पैरों में खड़ा कर सके ताकि ये ज्योत जलती रहे। हमारी टीम का मानना है , कि एक बेटी को पढ़ाने से दो-दो परिवार साक्षर होते है। साक्षर माँ अपने बच्चे का चरित्र-निर्माण करती है। अतः वह जन्म-दाता ही नहीं, चरित्र निर्माता भी है, क्योंकि उसके अनेकों किरदार हैं। बस उन्हें हौसले की जरूरत है, उन्हें हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाने के अधिकार देने की जरूरत है। हमारे प्रमुख डॉ0 ओ. पी.यादव जी के मार्गदर्शन में हम इस सतत अभियान को जारी रखने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन यह बात भी सत्य है कि , इन प्रयासों को समाज के विभिन्न तबकों का सहयोग जरूरी है। हम अपेक्षा करते हैं कि, सरकार के साथ हमारे जन प्रतिनिधियों से हमें अपेक्षित सहयोग और मार्गदर्शन मिले। डॉ ओ0 पी यादव जी के संरक्षण में आने वाले दिनों में फाउण्डेशन 11 बालिकाओं को पुनः संरक्षण देने जा रहा है, हमारा प्रयास है कि , इस प्रकार जरूरतमंद बच्चों को अपनाकर इस ज्योति को लगातार जलाए रखें।

महिपाल पिलख्वाल
महासचिव
उत्तरायण फेथ फाउंडेशन एवं
आई.टी.कंसलटेंट एन.एच.आई, नई दिल्ली

NATIONAL HEART INSTITUTE

TRANSPLANTING HEALTH AND HAPPINESS

UTTARAYANA HEALTH